श्री नृसिंहभारतीमहास्वामिनां अष्टोत्तर शतनामावलिः

श्रीशृंगेरी पुराधीशाय नमः
शारदापीठ पूजकाय नमः
तुंगभद्रा तीरवासिने नमः
तुंग कल्याण वैभवाय नमः
सुपैंगळ शरत् कृष्ण –
-चतुर्दश्यश्विनी भवाय नमः
कल्याण गुण संपूर्णाय नमः
सर्व वंद्य पदांबुजाय नमः
कामादि करिहर्यक्षाय नमः
कलिध्वांत दिवाकराय नमः
ईश्वराब्द तपस्याप्त प्राज्य -
- तुर्याश्रमक्रमाय नमः १०
सच्चिदानंद योगींद्र करांभोरुह -
- संभवाय नमः
ब्रह्मचर्याप्त परमहंसाश्रम -
- धुरंधराय नमः
श्रीमच्छंकर योगींद्र महापीठ -
- प्रतिष्ठिताय नमः
श्रीमत्परमहंसादि परिव्राजक -
- सद्गुरवे नमः
जितेंद्रियाय नमः
सत्य वादिने नमः
माणिक्य मकुटोज्वलाय नमः
कौसुंभ वसनोपेताय नमः
करुणावरुणालयाय नमः
चंद्रमौळीश्वर श्रीमत् पादांभोरुह -
- पूजकाय नमः २०
सुरत्नगर्भ हेरंब समाराधन -
- तत्पराय नमः
लक्ष्मीनृसिंह पादाब्ज परिचर्या
- परायणाय नमः
षड्दर्शनीमुख्य विद्या व्याख्या -
- सिंहासनेश्वराय नमः
कर्णाटश्री सिंहपीठ प्रतिष्ठापन पंडिताय नमः
तेजोविभूति संपन्नाय नमः
तिर्यक् पुंड्र विराजिताय नमः
रुद्राक्षमालाभरणाय नमः
भस्मोद्धूळित विग्रहाय नमः
लसद्ज्ञानैक दंडाढ्याय नमः
जगद्गुरु पदांकिताय नमः
सपंच कलश स्वर्ण -
- तिर्यगांदोलिकांचिताय नमः
पृथ्वीमंडल विख्यात लसन्मकर तोरणाय नमः
पंचशाख प्रदीपादि समस्त बिरुदांकिताय नमः
स्फुरन्नाद मनोहारि द्विशंख बिरुदोज्वलाय नमः
अष्टांग योग निष्णाताय नमः
शिष्टेष्ट फलदायकाय नमः
तत्त्वमस्यादि वाक्यार्थ -
निर्णयैक विचक्षणाय नमः
पदवाक्य प्रमाणज्ञाय नमः
प्रसन्न वदनांबुजाय नमः
भगवत्पाद विवृताद्वैत सिद्धांत -
- पारगाय नमः ४०
षण्मत स्थापनाचार्याय नमः
भक्त ज्ञान प्रदायकाय नमः
महा प्रणवसन्मंत्र -
- जपानुष्ठान तत्पराय नमः
निजौदार्य पराभूत -
- कामधुक्कल्पभूरुहाय नमः
तपोमहिम संपन्नाय नमः
भूगीर्वाण तपःफलाय नमः
मधुरालाप चातुर्य -
- नंदिताशेष सज्जनाय नमः
शांति दांत्यादि संपन्नाय नमः
सच्चिदानंद लोलुपाय नमः
संततानशन प्रख्य व्रतैकनिरताय नमः
सुधिये नमः
सर्वभाषा लिपिज्ञात्रे नमः
सर्वशास्त्रार्थ तत्त्वविदे नमः
संकल्पमात्र संसिद्ध निग्रहानुग्रह क्रमाय नमः

शीतोष्ण सुखदुःखादि -

- द्वंद्वातीताय नमः

दृढ व्रताय नमः

शिवावताराय नमः

सत्कीर्तिवासिताशेष दिङ्मुखाय नमः

निगमागम सिद्धांत व्यवस्थापन -

- दीक्षिताय नमः

श्रुति स्मृतिपथातीत दुर्मत -

- ध्वांतभास्कराय नमः ६०

श्रौत स्मार्त सदाचार संस्थापन -

- धुरंधराय नमः

साधुभक्त व्यूह सर्व पूरणार्थ -

- प्रबोधकाय नमः

पंचाक्षरी महामंत्र परमार्थ -

- प्रकाशकाय नमः

चक्रेश्वरी महाविद्या रहस्यार्थ -

- सुबोधकाय नमः

अशीतिसंख्य दुःसाध्य योगासन -

- विशारदाय नमः

द्वारकादि महाक्षेत्र यात्रा संतुष्ट -

- मानसाय नमः

विद्यारण्य महायोगि मर्यादा -

- परिपालकाय नमः

विद्यानगर सौभाग्य राजधानी -

- प्रभाकराय नमः

विद्वद्वर्य शिरःश्लाघ्य कविता -

- प्रौढिमान्विताय नमः

गंगाप्रवाह सदृश -

- वाग्वैखर्याश्रयाय नमः

महते नमः

दुर्वार गर्व दुर्वादि दर्वीकर -

- खगेश्वराय नमः

पादाब्ज सेवा समय समाकांक्षि -

- नृपावलये नमः

ऊरीकृत शिवाद्वैत दूरीकृत -

- मनोभवाय नमः

दक्षिणामूर्ति सदृश मेधा वैभव -

- शोभिताय नमः

चित्त नैर्मल्य संदायि मैत्र्यादि -

- परिकर्मविदे नमः

अविद्यास्मितरागादि पंचक्लेश -

- विवर्जिताय नमः

पारावाराति गंभीराय नमः

प्रज्ञा संमितवाक्पतये नमः

दुर्विज्ञेय निजाकूताय नमः ८०

प्रतिज्ञातार्थ साधकाय नमः

भव संताप संतप्त ज्योत्लायित -

- दरस्मिताय नमः

अमृतासार निष्यंदि सरसापांग -

- वीक्षणाय नमः

चिन्मुद्रांचित हस्ताब्जाय नमः

खमुद्रास्थापन क्षमाय नमः

स्वस्वरूपानु संधान निर्निद्राय नमः

निःस्पृहाय नमः

शुचये नमः

निर्ममाय नमः

निरहंकाराय नमः

निरसूयाय नमः

निरामयाय नमः

निस्तंद्राय नमः

नित्य संतुष्टाय नमः

नीतिमार्ग प्रदर्शकाय नमः

श्रीमते नमः

भूमंडलाचार्याय नमः

श्रित सज्जन पोषणाय नमः

सर्वभूत दयाशालिने नमः

कृतज्ञाय नमः १००

दोषवर्जिताय नमः

सदासद्धर्म निरताय नमः

नियतात्मने नमः

क्षमा निधये नमः

चामराजेश्वर श्लाघ्य

-महारथसमर्पकाय नमः

महीशूर पुराधीश

- राज संतति पूजिताय नमः

लोकपूज्याय नमः

श्रीनृसिंहभारत्याख्य यतीश्वराय नमः

****